CAAE – 1 (H)

सहायक लेखा अधिकारी सामूहिक परीक्षा

मई, 2012

सार लेखन, मसौदा और व्याकरण

समय : 3 घंटे | *अधिकतम अंक : 100*

टिप्पणीः इस प्रशन पत्र में **4** पृष्ठ और **7** प्रश्न हैं।

1. निम्नलिखित लेखांश का सार लिखिए और उसे उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

मानव व्यवहार में अवश्य ही बहुत से प्रेरक घटक होते हैं परन्तु हम दावा करना चाहेंगे कि विशेष रूप से राष्ट्रीयता का अध्ययन किया जाना चाहिए। यह विशेष रूप से क्यों महत्वपूर्ण है? इसका महत्व तीव्र निष्ठा और घृणा को जाग्रत करने में निहित है जो अत्यधिक हिंसा और साहस के कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं, लोग अपने राष्ट्रों के लिए मारते और मरते हैं। निस्संदेह केवल राष्ट्रीयता के लिए ही ऐसा नहीं होताः लोग अपने परिवारों, अपने विस्तारित परिवारों अथवा 'वंशों', अपनी जनसंख्या वाले गृह क्षेत्रों, और अपने धार्मिक समूहों एवं पवित्र स्थानों और अपने धर्म के प्रतीकों की रक्षा करने के लिए इसी प्रकार की उग्रता के लिए प्रेरित हो जाते हैं। तथापि इन अन्य निष्ठाओं को राष्ट्रीयता की अपेक्षा समझना बल्कि अक्सर सरल होता है। वे माता-पिता जो अपने बच्चों के लिए बड़े से बड़े बलिदान करते हैं समस्त प्राणियों में विद्यमान सामान्य सहज वृत्ति का पालन करते देखे जा सकते हैं, जोकि अपनी स्वयं की आनुवंशिक प्रजाति की रक्षा करने की वृत्ति है। इस वृत्ति को किसी के विस्तारित परिवार की रक्षा करने की प्रवृत्ति में सक्रिय देखा जा सकता है; विस्तारित परिवार या कुछ थोड़े बड़े स्तर पर 'वंश' को, सम्भवतः उन अधिकांश परिस्थितियों में जिनमें मानव मौजूद रहे हैं, व्यक्ति या केंद्रक परिवार के बने रहने के लिए अनिवार्य रूप में भी देखा जा सकता है। व्यक्ति या केंद्रक परिवार के बने रहने के लिए राष्ट्र सामान्यतः अनिवार्य नहीं है। राष्ट्र सामान्यतः इस प्रकार से बने रहने के लिए अनिवार्य नहीं है। निश्चित रूप से, यदि सम्पूर्ण राष्ट्र मिटा दिए जाएं तो प्रत्येक व्यक्ति और उनका परिवार मर जाएंगें परन्तु सामाजिक इकाई के रूप में राष्ट्र के लुप्त हो जाने से वह स्वयं में व्यक्ति या परिवार के अस्तित्व के लिए कोई खतरा नहीं होगा; जब तक कि यदि इसके साथ जातीय हिंसा या भारी आर्थिक विफलता भी न हुई हो और ऐसी प्रलयकारी घटनाएं राजनीतिक स्वतंत्रता की हानि के अपरिहार्य परिणाम नहीं हैं। इसके विपरीत, परतंत्र राष्ट्र द्वारा राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने और इसके नागरिकों के लिए जीवन के अधिक अवसर होने के बीच कोई तर्कसंगत संबंध नहीं है।

सम्भवतः बड़ी संख्या में आधुनिक राष्ट्रों में इसी तरह से इस प्रकार का कोई साक्ष्य नहीं है कि राष्ट्र की रक्षा करने में कोई अपनी स्वयं की अनुवांशिक प्रजाति की रक्षा कर रहे हैं; अत्याधुनिक लोगों के बहुत ही विविधतापूर्ण अनुवांशिक स्वरूप को देखते हुए इस धारणा का कोई अर्थ नहीं है कि आधुनिक राष्ट्रों के नागरिक कुटुम्ब हैं, जबकि (राजनीतिक रूप से) विरोधी पड़ोसियों के नागरिक पराए हैं।

अपने राष्ट्र के लिए समर्थन की भांति किसी के धार्मिक समूह की निष्ठा में परिवार की रक्षा की अपेक्षा स्पष्ट ही व्यक्ति का लाभ काफी कम है, परंतु हमारी धारणा है कि यह राष्ट्रीयता की अपेक्षा अधिक बोधगम्य हो सकत है। इसे आदर्शवादिता के रूप में विश्व के प्रति अपने दृष्टिकोण और इसके प्रतीकों के विरोधी दृष्टिकोण से रक्षा की दृष्टि से देखा जा सकता है, जबकि किसी के राष्ट्र की रक्षा को अक्सर अपने धर्म की रक्षा के रूप में देखा जाता है, और जबकि राष्ट्रों के बीच आधुनिक विद्वेश में अक्सर धार्मिक आयाम भी होता है, ऐसे कई गम्भीर राष्ट्रीय संगर्ष हैं जिनमें कोई स्पष्ट धार्मिक तत्व नहीं है; यूरोप में दो विश्व युद्ध लड़े गए जिनमें कैथोलिक फ्रांस, प्रोटेस्टेंट ब्रिटेन, और आर्थोडोक्स रूस शामिल थे जो जर्मनी के विरुद्ध थे जिसमें कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों समुदायों के लोग रहते थे। इस प्रकार, जबकि आधुनिक राष्ट्रवादिता को धर्म से जोड़ा जा सकता है, कई मामले ऐसे भी देखे जा सकते हैं जिनमें स्पष्ट रूप से कोई धर्म की बात नहीं है। न केवल आधुनिक राष्ट्रवादों में धार्मिक अंश ही नहीं होता; विरोधी राष्ट्रों के बीच (बाहर वालों के लिए) कोई स्पष्ट वैचारिक मतभेद नहीं होता। अतः, जबकि किसी के धर्म की रक्षा को विश्वासों की समस्त प्रणाली, अर्थात् विश्व दृष्टिकोण, की रक्षा के रूप में देखा जा सकता है, कई मामलों में यह दावा करना कठिन है कि यह किसी के राष्ट्र की रक्षा के बारे में सही है। वास्तव में 'काल्पनिक समुदाय' के रूप में देशों को देखे जाने का एक अच्छा कारण है, और कुछ भाष्यकारों का ऐसा दृष्टिकोण है।

ऐसे काल्पनिक समुदाय अवश्य ही मौजूद नहीं हो सकते थे जब तक कि वे किसी आवश्यकता को पूरा नहीं करते। हम मान सकते हैं कि किसी प्रकार के समुदाय से संबन्ध रखने की आवश्यकता एक मूलभूत मानव लक्षण है। यह भी मान सकते हैं कि राष्ट्र इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए खड़े हुए हैं क्योंकि पूर्व में अधिक प्राथमिक समुदायों - स्थानीय, 'जनजातीय' और धार्मिक — ने आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से अपना महत्व खो दिया है। परन्तु कुछ अन्य प्रकार की इकाई के बजाय, राष्ट्रों द्वारा इस आवश्यकता की पूर्ति क्यों की जानी चाहिए। अठारहवीं शताब्दी के लगभग मध्य से सक्रिय विशेष सामाजिक और आर्थिक स्थितियों, अर्थात् 'आधुनिकीकरण', के उत्पाद के रूप में राष्ट्रों को देखे जाने का साहित्य में भरपूर समर्थन है। (807 शब्द)

(40 अंक)

2. सचिव (पेंशन) की ओर से भारत सरकार के सभी सचिवों को भेजे जाने वाले अर्ध-शासकीय पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए जिसमें उनसे कहा गया हो कि वे अपने प्रशासनिक नियंत्रण के संबंधित संयुक्त सचिवों को इस आशय के आवश्यक अनुदेश जारी करें कि 2006 से पूर्व के पेंशन/परिवार पेंशन के मामलों के संशोधन के लिए आवश्यक अपेक्षित सूचना संबंधित भुगतान और लेखा कार्यालयों को भेज दी जाए ताकि इन मामलों का निपटान समय पर किया जा सके।

(25 अंक)

3. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

The world does not need extraordinarily talented people. It does not need highly skilled people either. It has plenty of super-intelligent people. We need ordinary people with extraordinary motivation. M.K. Gandhi was an ordinary man with amazing motivation to establish truth and justice. The Wright Brothers were ordinary people with a dream of flying.

You can also achieve exceptional results if you are inspired with a higher ideal. Replacing 'inspiration' with 'information' has led to knowledge being viewed as drudgery rather than as pleasure. Education has degenerated to data being transmitted from teacher to the taught without igniting the minds of the young with a higher purpose.

How many of us wake up inspired, looking forward to a day of service? Who among us finds exhilaration in contributing to society? Life changes magically from boredom to excitement when you are inspired to serve. You redefine norms and achieve the impossible, paving the way to outstanding success. You find happiness at work, not in escaping from it. Most importantly, you evolve spiritually and attain God hood.

(10 अंक)

4. निम्नलिखित युग्मों में से **किन्हीं पांच** को वाक्यों में इस तरह प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए और उनके बीच का अंतर भी समझ में आ जाए:- *(5 अंक)*

(i) नियति — नीयत
(ii) अयश — अयस
(iii) परिमाण — परिणाम
(iv) प्रसाद — प्रासाद
(v) कृमि — कर्मी
(vi) लग्न — लगन
(vii) कांति — क्रांति

5. निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों में से **केवल पाँच** का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

(10 अंक)

(i) इमली के पात पर दंड पेलना
(ii) उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई
(iii) नक्कारखाने में तूती की आवाज
(iv) न ऊधो का लेना न माधो का देना
(v) चींटी के पर निकलना
(vi) पेट का पानी न पचना
(vii) रंगा सियार होना
(viii) गुड़-गोबर करना

6. निम्नलिखित शब्दों में से **किन्हीं पांच** के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिएः- *(5 अंक)*

(i) अभिजात
(ii) झंडा
(iii) मोर
(iv) आदर्श
(v) सुरभि
(vi) शोभा
(vii) अंचल

7. निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों में से **किन्ही पाँच** शब्दों को शुद्ध करके लिखिएः- *(5 अंक)*

(i) प्रदर्शिनी
(ii) अतिथी
(iii) उज्वल
(iv) आर्शिवाद
(v) अनुगृह
(vi) शाषकीय
(vii) अधिशाषी

CAAE – 1 (E)

COMMON ASSISTANT ACCOUNTS OFFICER EXAMINATION

MAY, 2012

PRECIS, DRAFT AND GRAMMAR

Time Allowed : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

Note : This question paper contains **4** pages and has **7** questions.

1. **Make a précis of the following passage and give an appropriate title.**

There are, of course, many motivating factors in human behaviour, but we would claim that nationalism is particularly worthy of study. Why is it particularly significant? Its significance lies in its power to arouse passionate loyalties and hatreds that motivate acts of extreme violence and courage; people kill and die for their nations. Of course it is not alone in this: people are driven to similar extremes to protect their families, their extended families or 'tribes', their home areas with their populations, and their religious groups and the holy places and symbols of their religions. However, these other loyalties are often rather easier to understand than nationalism. Parents making supreme sacrifices for their children can be seen as obeying a universal imperative in life forms, the instinct to protect one's own genetic material. This instinct can also be seen at work in the urge to protect one's extended family; but then the extended family, or on a slightly larger scale the 'tribe', can also be seen, in perhaps the majority of circumstances in which human beings have existed, as essential for the survival of the individual and the nuclear family. The nation is not generally essential for the survival of the individual and the nuclear family. The nation is not generally essential to survival in this way. Of course, if the entire nation were to be wiped out, the individuals and their families would die, but the disappearance of the nation as a social unit would not in itself pose a threat to individual or family survival; only if it were to be accompanied by ethnic violence or severe economic collapse would it be life-threatening, and such cataclysmic events are not an inevitable consequence of the loss of political independence. Conversely, there is no logical connection between the gaining of political independence by a subject nation and increased life chances for its citizens. In many, perhaps the vast majority, of modern nations there is likewise no evidence that in defending the nation one is defending one's own genetic

material; the notion that the citizens of modern nations are kinsfolk, while the citizens of (potentially) hostile neighbours are aliens, makes no sense in view of the highly varied genetic make-up of most modern populations.

Devotion to one's religious group, like support for one's nation, is much less obviously to the individual's advantage than is defence of the family, but we would maintain that it can be more comprehensible than nationalism. It can be seen in ideological terms as the defence of one's world view and its symbols against rival world views. While the defence of one's nation has often been seen as the defence of one's religion, and while modern hostilities between nations frequently do have a religious dimension, there are many serious national conflicts that have no clear religious element; the two world wars were fought in Europe with Catholic France, Protestant Britain, and Orthodox Russia opposing Germany with its mixed Catholic and Protestant population. Thus, while modern nationalisms may be linked to religion, many cases can be found without any clear religious dimension. Not only do modern nationalisms lack a religious element; there is often (to outsiders) no obvious ideological difference between rival nations. Hence, while defence of one's religion can be seen as defence of an entire system of beliefs, a world view, it is difficult in many cases to claim that this is true of the defence of one's nation. There is in fact a good case for seeing nations as 'imagined communities', and such would be the view of some commentators.

Such imagined communities could not, of course, exist unless they fulfilled a need. We can postulate that the need to belong to a community of some kind is a fundamental human characteristic, and that nations have arisen to fulfill this need, as earlier more primary communities-local, 'tribal', and religious have lost their significance through economic and social change. But why should this need be fulfilled by nations, rather than some other type of unit? There is strong support in literature for a view of nations as products of particular social and economic conditions operating from around the mid-eighteenth century, as products of 'modernization'.

(698 words) *(40 marks)*

2. Draft a D.O. letter from Secretary (Pension) to all the Secretaries of the Government of India to issue necessary instructions to the concerned Joint Secretaries under their administrative control to furnish the requisite information required for the revision of Pre-2006 Pension/Family Pension Cases to concerned Pay & Accounts Offices, so that these cases may be settled on time.

(25 marks)

3. **Fill in the blanks using the appropriate forms of the words given below:**

Cordial; evaporate; clear; consistent; inoculate; complete; matrimony; normal; decide; precede.

(i) Have you got your child.........against cholera?

(ii) The reason has been given in the..........paragraph.

(iii) Within a short time half of the acid in this jar will have..................

(iv) She was prevented by emotion from..........her speech.

(v) His............to go abroad was disliked by his parents.

(vi) All the guests were received with equal..........and warmth.

(vii) On account of the strict vigil of the army.............has returned to the riot-affected localities.

(viii) Extra marks will be awarded for.............and precision.

(ix) The..........high level of his performance evoked much praise from his teachers.

(x) As a last resort they had to publish a.................advertisement in the press.

(10 marks)

4. **Use <u>any five</u> of the following phrases in your own sentences so as to bring out their meaning:**

(i) A bone of contention

(ii) The writing on the wall

(iii) A bolt from the blue

(iv) A black sheep

(v) To come off with flying colours

(vi) To burn one's boats

(vii) To have lost one's tongue

(10 marks)

5. **Change <u>any five</u> of the following sentences into indirect speech:**

(i) The teacher said; "Children, do not quarrel over trifles."

(ii) Ram said to me, "Help me carry my box."

(iii) She said, "Let us have some tea."

(iv) He said, "Alas! I am undone."

(v) Mohan said to me, "You should do your work quietly."

(vi) I said to him, "Will you teach me?"

(vii) The thief said, "Yes, I stole the money."

(5 marks)

6. **Rewrite any five of the following sentences after making necessary corrections:**

(i) The gold is very costly these days.

(ii) I am one of those who is unable to control his anger.

(iii) You must aim to achieve a high position in society.

(iv) I made my friend to study hard for the examination.

(v) Why have you written this letter with red ink?

(vi) Character is more preferable than intelligence.

(vii) Never enter into my house again.

(5 marks)

7. **Do as directed:**

(i) It is too late to go out. **(Remove 'too')**

(ii) I do not have much money. I cannot spare any. **(Combine the two sentences into a single simple sentence).**

(iii) He climbed peak of Alps, not of Himalayas. **(Supply articles where necessary).**

(iv) You are quite young; you can still learn music. **(Rewrite using 'enough').**

(v) Nobody is incapable of error. **(Substitute a single word for the underlined phrase).**

(5 marks)